



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO



LATEST
EDITION

CTET

(CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST)

प्राइमरी लेवल

HANDWRITTEN NOTES

भाग-3 संस्कृत



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

CTET

प्राथमिक स्तर (Primary Level)



ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु मे उँ॥

भाग - 3 संस्कृत (I&II)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)” (प्राथमिक स्तर) को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION (CBSE) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)” (प्राथमिक स्तर)” भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

WhatsApp करें - <https://wa.link/hvnbp7>

Online Order करें - <https://shorturl.at/nM368>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2024)

	संस्कृत	
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	शब्द रूप	1
2.	धातु रूप	11
3.	कारक	19
4.	अव्यय + उपसर्ग	24
5.	प्रत्यय	33
6.	सन्धि	38
7.	समास	49
8.	सर्वनाम	60
9.	विशेषण एवं विशेष्य	67
10.	उच्चारण स्थान	73
11.	लिंग	77
12.	विलोम शब्द	80
13.	वाच्य परिवर्तन	88
14.	छंद	97
15.	अलंकार	100
16.	अपठित गद्यांश	106
17.	पद्यांश	117
18.	संस्कृत भाषा की शिक्षण विधियाँ	120

अध्याय - 1

शब्दरूप

1. अकारान्त पुलिX एकवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामः	श्यामः	शिक्षकः	देवः	बालकः
द्वितीया	रामम्	श्यामम्	शिक्षकम्	देवम्	बालकम्
तृतीया	रामेण	श्यामेन	शिक्षकेण	देवेन	बालकेन
चतुर्थी	रामाय	श्यामाय	शिक्षकाय	देवाय	बालकाय
पञ्चमी	रामात्	श्यामात्	शिक्षकात्	देवात्	बालकात्
षष्ठी	रामस्य	श्यामस्य	शिक्षकस्य	देवस्य	बालकस्य
सप्तमी	रामे	श्यामे	शिक्षके	देवे	बालके
सम्बोधन	हे राम!	हे श्याम!	हे शिक्षक!	हे देव!	हे बालक!

अकारान्त पुलिX द्विवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
द्वितीया	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
तृतीया	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
चतुर्थी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
पञ्चमी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
षष्ठी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सप्तमी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सम्बोधन	हे रामौ!	हे श्यामौ!	हे शिक्षकौ!	हे देवौ!	हे बालकौ!

अकारान्त पुलिX बहुवचन

विभक्ति	राम	इयाम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामाः	इयामाः	शिक्षकाः	देवाः	बालकाः
द्वितीया	रामान्	इयामान्	शिक्षकान्	देवान्	बालकान्
तृतीया	रामैः	इयामैः	शिक्षकैः	देवैः	बालकैः
चतुर्थी	रामेभ्यः	इयामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
पञ्चमी	रामेभ्यः	इयामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
षष्ठी	रामाणाम्	इयामाणाम्	शिक्षकाणाम्	देवाणाम्	बालकाणाम्
सप्तमी	रामेषु	इयामेषु	शिक्षकेषु	देवेषु	बालकेषु
सम्बोधन	हे रामाः!	हे इयामाः!	हे शिक्षकाः!	हे देवाः!	हे बालकाः!

2. इकारान्त पुलिX एकवचन

विभक्ति	हरि	मुनि	ऋषि	कवि	श्रवि
प्रथमा	हरिः	मुनिः	ऋषिः	कविः	श्रविः
द्वितीया	हरिम्	मुनिम्	ऋषिम्	कविम्	श्रविम्
तृतीया	हरिणा	मुनिना	ऋषिणा	कविना	श्रविणा
चतुर्थी	हरये	मुनये	ऋषये	कवये	श्रवये
पञ्चमी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	श्रवेः
षष्ठी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	श्रवेः
सप्तमी	हरौ	मुनौ	ऋषौ	कवौ	श्रवौ
सम्बोधन	हरे!	हे मुने!	हे ऋषे!	हे कवे!	हे श्रवे!

इकारान्त पुलिX द्विवचन

प्रथमा	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
द्वितीया	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
तृतीया	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
चतुर्थी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
पञ्चमी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
षष्ठी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सप्तमी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सम्बोधन	हे हरी!	हे मुनी!	हे ऋषी!	हे कवी!	हे रवी!

इकारान्त पुलिX बहुवचन

प्रथमा	हरयः	ऋषयः	रवयः	मुनयः	कवयः
द्वितीया	हरीन्	ऋषीन्	रवीन्	मुनीन्	कवीन्
तृतीया	हरिभिः	ऋषिभिः	रविभिः	मुनिभिः	कविभिः
चतुर्थी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
पञ्चमी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
षष्ठी	हरीणाम्	ऋषीणाम्	रवीणाम्	मुनीनाम्	कवीनाम्
सप्तमी	हरिषु	ऋषिषु	रविषु	मुनिषु	कविषु
सम्बोधन	हे हरयः!	हे ऋषयः!	हे रवयः!	हे मुनयः!	हे कवयः!

उकारान्त पुलि^१ एकवचन

विभक्ति	गुरु	भानु	शम्भु	शिबु	साधु
प्रथमा	गुरुः	भानुः	शम्भुः	शिबुः	साधुः
द्वितीया	गुरुम्	भानुम्	शम्भुम्	शिबुम्	साधुम्
तृतीया	गुरुणा	भानुना	शम्भुना	शिबुना	साधुना

अध्याय - 6

सन्धि:

- स्रम् + √धा + कि = स्रन्धिः (पुँल्लिX)
- 'स्रन्धि' शब्द का अर्थ है - मेल या योग अर्थात् मिलना।
- "वर्णानां परस्परं विकृतिमात् स्रन्धानं स्रन्धिः" अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'स्रन्धि' कहलाता है। 'विकृति' का मतलब है - वर्णपरिवर्तन।
- इस प्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'स्रन्धि' कहते हैं।

जैसे -

- (i) रमा + ईशः = रमेशः
- (ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)
- (iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)
- (iv) रमेशः (गुण स्रन्धि)

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया। यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही स्रन्धि है।

- ❖ **संहिता** - 'स्रन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व है - संहिता।

सूत्र - "परः स्रन्निकर्षः संहिता"

अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त स्रन्निकट हो जाना ही 'संहिता' है।

- ❖ 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध है कि -

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपस्र्गयोः।

नित्या स्रमासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

- (i) संहिता (स्रन्धि) एक पद में नित्य होती है।
जैसे -
नै + अकः = नायकः

पौ + अकः = पावकः

भो + अनम् = भवनम्

- (ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती है -

जैसे -

नि + अवस्रत् = न्यवस्रत्

प्र + ऋच्छति = प्राच्छति

अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

- (iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी -

जैसे -

देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)

देव + आलयः = देवालयः

कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)

कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

- (iv) वाक्य में संहिता (स्रन्धि) विवक्षाधीन होती है अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन है कि आप चाहें तो स्रन्धि करें या चाहें तो न करें -

जैसे -

- ❖ रामः गच्छति वनम्। (स्रन्धि नहीं हुई)
- रामो गच्छति वनम्। (स्रन्धि कार्य हुआ)

- ❖ अत्र कः अस्ति। (स्रन्धि नहीं हुई)

- ❖ द्वाविंशो एवं वर्ष इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (स्रन्धि नहीं हुई)

- **स्रन्धि विच्छेद** - स्रन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही स्रन्धि विच्छेद है।

स्रन्धि = मिलना विच्छेद = अलग करना।

जैसे - गणेशः का स्रन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।

'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

- **स्रन्धि में क्या होगा - - - - ?**

1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता है

-

जैसे -

रवि + ईशः = रवीशः (इ + ई = ई)

सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ + इ = ए)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

एकः पूर्वपर्यायः (6.1.84) पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. दो वर्णों के निकट अने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता है।

जैसे -

इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य)

मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व)

ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय)

‘एकस्थाने एकादेशः’ - एक स्थान पर एक आदेश होगा।

3. दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता है -

जैसे - रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)

दोषः अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

4. दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।

जैसे - एकस्मिन् + अवसारे = एकस्मिन्नावसारे

5. कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा।

जैसे - तत् + शिवः = तच्छिवः

वाक् + हरिः = वाग्घरिः

यहाँ ‘त् + श्’ वर्णों में सन्धि हुई तो त् को ‘च्’ तथा श् को ‘छ’ हो गया।

6. कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आया।

जैसे - वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

यहाँ ‘क्ष’ एवं ‘छ’ के बीच ‘च्’ के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

प्रकार -

(1) स्वर संधि (अच्)

(2) व्यंजन संधि (हल्)

(3) विसर्ग संधि

(1) स्वर संधि

→ दीर्घ संधि

→ गुण संधि

→ वृद्धि संधि

→ यण् संधि

→ अयादि संधि

इसके अतिरिक्त दो और हैं - पूर्वरूप संधि, पररूप संधि

(a) दीर्घ संधि :- अकः सवर्णे दीर्घः

नियम :-

अ/आ + आ/अ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

ऋ + ऋ = ऋ

Ex - परमात्माः = परम + आत्मा (अ + आ = आ)

रवीन्द्रः = रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)

वधूत्सवः = वधू + उत्सव (ऊ + उ = ऊ)

पितृणाम् = पितृ + ऋणाम् (ऋ + ऋ = ऋ)

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

1. हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)

हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)

हिम आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ ‘आ’ आदेश)

हिमालयः (सन्धियुक्त पद)

उपर्युक्त उदाहरण में ‘हिम’ के म में विद्यमान ‘अ’ आलयः के ‘आ’ से मिलकर दीर्घ ‘आ’ हो गया।

(21) कं + पनम् = कम्पनम्

(22) गुं + फितः = गुम्फितः

(23) लं + बः = लम्बः

(24) स्तं + भः = स्तम्भः

(h) छत्त्व सन्धि :- शशछोडटे

पूर्व पद - सकार

Ex. = तद् + शिवः = तच्छिवः

परवर्ण - शकार

सत् + शीलः = सच्छीलः

Change - छकार हो जाता है।

➤ विभ्रग संधि

सत्त्व सन्धि :-

(1) विभ्रगनीयस्य सः :- कुछ नियमों को देखना पड़ता है -

नियम :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश

विभ्रग (ः) + खर् (वर्ण का 1, 2 वर्ण / श ष स)
= ख्, ष्, श्

(a) विभ्रग (ः) + क् / त् = ख्

Ex. = नमः + कार = नमस्कार

नमः + ते = नमस्ते

(b) विभ्रग (ः) + च / छ = श्

Ex. = निः + चल = निश्चल

निः + छल = निश्छल

कः + चित् = कश्चित्

(c) विभ्रग (ः) + क, ख / ट, ठ / प, फ = ष्

Ex. = धनुः + टंकार = धनुषंकार

निः + प्राण = निष्प्राण

रामः + टीकते = रामटीकते

(2) सत्त्व सन्धि :-

(a) ससजुपोक् :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश

(अ/आ) को छोड़कर + स्वर/ = तो (र) होता

अन्य स्वर आना/ वर्ण का 1,2,3 हो

विभ्रग (ः)

Ex. = निः + बल = निर्बलः

[यदि विभ्रग का मेल व्यंजन से हो, तो

दुः + बल = दुर्बलः आधा (र) बनता है।]

निः + उत्तर = निःस्तरः [यदि विभ्रग का मेल स्वर से हो

पितुः + इच्छा = पितुश्च्छा तो पूरा (र) बनता है।]

(3) ज्व सन्धि :-

(a) अतो रो र फुतादफुते :-

पूर्वपद + परवर्ण = आदेश

विभ्रग से पहले +(अत्) हो, तो (र) के स्थान पर (उ) हो जाता।

(अ) होना

Ex. = रामः + अवदत् = रामोऽवदत्

शिवउ + अवदत् = शिवोऽवदत्

(b) रोरि :- र के बाद र आये तो पूर्व (र) का लोप।

Ex. = पुनर + रमते = पुनरमते

अध्याय -16

अपठित गद्यांश

गद्यांशः. 1

सत्स्रः मदिमानं को न जानाति? संसारे

सज्जनाः अपि दुर्जनाः अपि सन्ति। दुर्जनस्य

स्रः कोऽपि कर्तुं न इच्छति। अपरत्र

सत्स्रम् विना मानवस्य जीवनम् एवं दुर्जीवनं भवति। वस्तुतः सत्स्रः जनानां पोषिका

कुस्रिच नाशिका। सर्वे जनाः स्वपोषमेव

इच्छन्ति विनाशं तु न इच्छन्ति। अतः सत्स्रः एवं श्रेयसी। सज्जनाः तु स्वगुणैः

एव सन्तः कथ्यन्ते, अत एव जनः सज्जनानां

गुणैः स्पृह्यन्ति। सद्गुणैव जनः मनसा

वाचा कर्मणा स्वस्थो भवति। तेन तस्य आयुः

वर्धते, यशः अपि सततं वर्धते। को न जानाति

यत् सर्वेषां देशानां महापुरुषाः अपि सत्स्रः श्रेष्ठं पदवीं प्राप्नुवन्।

1. 'दुर्जनाः' इति पदे कः उपसर्गः?

(क) दुस्र्

(ख) दु

(ग) दुर्

(घ) दुर्जः

उत्तर (ग)

2. 'कुस्रिच' इति पदस्य विच्छेदं कुरुत -

(क) कु + स्रिच

(ख) कुस्रि + च

(ग) कुस्रि + च

(घ) कुस्रि + च

उत्तर (ख)

3. 'अलभन्त' इत्यर्थे अत्र गद्यांशे किं पदं प्रयुक्तम् ?

(क) प्राप्तः

(ख) प्राप्तवान्

(ग) प्राप्नुवन्

(घ) अप्राप्तः

उत्तर (ग)

4. 'पोषिका' इति पदे कः प्रत्ययः ?

(क) टप्

(ख) डीप्

(ग) डीष्

(घ) क्यप्

उत्तर (क)

5. 'जनाः गुणैः स्पृह्यन्ति' अत्र 'जनाः' वचनम् किम् ?

(क) एकवचनम्

(ख) द्विवचनम्

(ग) बहुवचनम्

(घ) कोऽपि न

उत्तर (ग)

6. 'महापुरुषाः' इति पदे कः समासः ?

(क) द्विगुसमासः

(ख) द्वन्द्व समासः

(ग) कर्मधारयसमासः

(घ) अव्ययीभाव समासः

उत्तर (ग)

8. 'श्रेष्ठं पदवीम्' अनयोः विशेषणपदं किम् ?

(क) पदवीं

(ख) सत्स्यतिम्

(ग) श्रेष्ठं

(घ) प्राप्तः

उत्तर (ग)

9. 'यज्ञः अपि सततं वर्धते।' अत्र किम् अव्ययपदं प्रयुक्तम् ?

(क) यथा

(ख) अत्र

(ग) एव

(घ) अपि

उत्तर (घ)

10. 'अस्ति' इति पदे कः लकारः ?

(क) लोटलकारः

(ख) विधिलङ्लकारः

(ग) लटलकारः

(घ) लृटलकारः

उत्तर (ग)

गद्यांशः. 2

संस्कृतभाषा भारतीयभाषाणां जननी अस्ति। अनया भाषया सर्वाः प्रान्तीयभाषाः अनुप्राणिताः प्रभाविताः च सन्ति। इयं भाषा अतीव सरला मधुरा चास्ति। श्रुतिः उपनिषत् पुराणं दर्शनम् अन्यानि च शास्त्राणि संस्कृते एव रचितानि सन्ति। श्रुतयः चतस्रः सन्ति - ऋक्, यजुः, साम, अथर्व इति। श्रुतीनामाशयं स्मृतयः प्रतिपादयन्ति। यद्यपि बह्व्यः स्मृतयः सन्ति तथापि मनुस्मृतिः याज्ञवल्क्यस्मृतिः चेति द्वे स्मृती प्रसिद्धे स्तः।

1. 'यद्यपि' इत्यत्र सन्धि-विच्छेदः कः ?

(A) यदी + अपि

(B) यद् + अपि

(C) यदि + अपि

(D) यदि + अपि।

Ans. (C)

2. श्रुतीनामाशयं काः प्रतिपादयन्ति ?

(A) वेदाः

(B) स्मृतयः

(C) श्रुतयः

(D) उपनिषदः।

Ans. (B)

3. "स्मृती" इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः ? किं वचनं च ?

(A) प्रथमा - एकवचनम्

(B) द्वितीया - एकवचनम्

(C) प्रथमा - द्विवचनम्

(D) द्वितीया - बहुवचनम्।

Ans. (C)

4. 'चतस्रः' इत्यस्य पदस्य पूर्णं रूपं भवत् -

(A) चत्वारि

(B) चतुरः

(A) अमेरिकादेशवासिभिः

(B) भारतदेशवासिभिः

(C) इंग्लैण्डदेशवासिभिः

(D) जर्मनीदेशवासिभिः

(iii) शासनसत्ताधिकारिणः भयकारणं न भवन्ति -

(A) राजतन्त्रे (B) प्रजातन्त्रे

(C) A,B द्वयोऽपि (D) एकोऽपि न

(iv) बहवः' इति पदस्य विशेष्यपदं किम्?

(A) गुणाः (B) जनः

(C) विचारः (D) देशः

(v) प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्। रेखांकित पदे विभक्तिः अस्ति -

(A) तृतीया, एकवचन (B) द्वितीया, एकवचन

(C) द्वितीया, बहुवचन (D) तृतीया, बहुवचन

उत्तरमाला- (i).D (ii).C (iii).B (iv).A

(v).D

गद्यांशः. 5

दक्षिणात्ये जनपदे काञ्ची नाम नगरी आसीत्। काञ्चीं नगरीं निकषा एकः न्यग्रोधतक्षः आसीत्। लघुपत्तनकः नाम वायसः तं तक्षम् अधितिष्ठति स्म। सः एकदा तक्षं निकषा कञ्चन दुःखात्मानं व्याधम् अपश्यत्। तं दृष्ट्वा सः अचिन्तयत् - “धिक् एवं पापात्मानं यः प्राणिनः हन्ति। किञ्च किम् एतेन निन्दा वचनेन। इदानीं वट्वाग्निनः पक्षिणः बोधयामि, अन्यथा एषः व्याधः तान् ग्रहीष्यति”। ततः सः सर्वान् वट्वाग्निनः पक्षिणः अबोधयत् - “भोः पक्षिणः! दुर्मनसं व्याधं पश्यत, एषः हस्ते तण्डुलान् जालं च गृहीत्वा आगच्छति। जालं प्रसार्य तण्डुलान् विकरिष्यति। तण्डुलान् खादितुं मा गच्छत, अन्यथा सः भवतः सर्वान् जालेन बद्ध्वा नेष्यति।

1 वायसस्य नाम किम् ?

(A) दुर्मनसः (B) लघुपत्तनकः

(C) न्यग्रोधः (D) काञ्ची।

Ans. (B)

2 ‘प्रसार्य’ इत्यत्र कः प्रत्ययः ?

(A) यत् (B) ण्यत्

(C) ल्यप् (D) क्यप्।

Ans. (C)

3 ‘दुर्मनसम्’ इत्यत्र कः उपसर्गः ?

(A) दुः (B) दुष्

(C) दु (D) दुर्।

Ans. (D)

4 ‘पश्यत’ इत्यत्र धातुं लकार - पुरुष वचनानि कानि ?

शिक्षण सहायक सामाग्रयः

पारम्परिकम्

प्राचीन समय से

भाषा शिक्षण में

हम जिन उपकरणों

प्रयोग करते आ रहे हैं -

- इयामपट्ट (Blackboard)
- पाठ्यपुस्तकम् (9.M)
- चित्रम्
- मानचित्राणि
- पत्रिकाएँ

आधुनिकम्

दूरदर्शनम्

Projector

कम्प्यूटर आधारित

कक्षा

❖ दूरयोपकरणाम् (दूर्य साधन) :- दूर्य साधनों द्वारा शुद्ध लेखन तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास किया जाता है।

❖

सामान्य दूर्यसाधन

- इयामपट्ट
- चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र
- प्रतिरूप (मॉडल)
- चार्ट
- पाठ्यपुस्तक
- बाल साहित्य
- संग्रहालय

❖ **इयामपट्ट** :- यह संस्कृत शिक्षण में परम्परागत सहायक उपकरण है।

- दूर्य साधनों में सर्वोत्तम साधन है।
- शिक्षा जगत् में इयामपट्ट देने का श्रेय - जेक्स विलियमस को दिया जाता है।

दूर्यसाधन

यांत्रिक दूर्यसाधन

- उन्नत शीर्ष प्रक्षेपिका
- (आवरहेड प्रोजेक्टर)
- चित्र
- विस्तारक यंत्र

- प्राथमिक स्तर पर अक्षर ज्ञान कराने के लिए तथा छात्रों के लेखन कौशल को विकसित करने में इयामपट्ट उपयोगी है।
- इयामपट्ट का उपयोग करके शिक्षक छात्रों की वर्तनी तथा उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर कर सकता है।
- इयामपट्ट को संस्कृत अध्यापक का मित्र माना जाता है।

❖ **चित्र :-** संस्कृत भाषा शिक्षण को रोचक व सुग्राह्य बनाने में शिक्षक रंगीन व आकर्षक चित्रों का प्रयोग कर सकता है।

• चित्र के माध्यम से अमूर्त वस्तु अथवा उसकी संकल्पना मूर्तिमान हो जाती है।

❖ **मानचित्र :-** संस्कृत भाषा - शिक्षण करते समय छात्रों को किसी नगर की ऐतिहासिक तथा भौगोलिक स्थिति समझाने के लिए मानचित्रों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे :- तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि की स्थिति दर्शाने हेतु

❖ **रेखाचित्र :-**

• रेखाओं द्वारा आकृति प्रदान करके भी विषय वस्तु को स्पष्ट किया जा सकता है।

• किसी बिंदु का वर्गीकरण दर्शाने में भी रेखाचित्र सहायक होते हैं जैसे-व्याकरण शिक्षण करते समय, सन्धि, समास, प्रत्यय उपसर्ग आदि का भेद दर्शाने के लिए।

❖ **मॉडल/प्रतिरूप :-**

• किसी वस्तु की उपयुक्त व सुविधाजनक दृष्टि से की गई नकल प्रतिरूप होती है।

• आकार में बड़ी व दूर होने के कारण कई वस्तुओं, साधनों तथा स्थलों का कक्षा - कक्ष में प्रदर्शन संभव नहीं है, अतः उनके प्रतिरूप कक्षा में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। जैसे- ताजमहल, ग्लोब आदि।

❖ **चार्ट :-** संस्कृत भाषा शिक्षण करते समय तुलनात्मक अध्ययन करवाने के लिए शब्द रूप तथा धातुरूपों का विभिन्न विभक्तियों में स्वरूप बताने की दृष्टि से चार्ट का प्रयोग किया जाता है।

2. श्रव्यसामग्री

• आकाशवाणी (रेडियो) :-

• ग्रामोफोन

• टेपरिकार्ड

• लिंगवाफोन

• भाषाप्रयोगशाला :- बच्चों के उच्चारण में कोई समस्या है तो उसको भाषा प्रयोगशाला में ले जाकर बार-बार Practice कराया जाता है।

3. दृश्यश्रव्यसामग्री

• दृश्यश्रव्य सामग्री से बच्चे किसी भी विषय को देखकर तथा सुनकर समझते हैं।

• दृश्यश्रव्य सामग्री से शिक्षार्थियों का ज्ञान स्पष्ट एवं स्थायी होता है -

❖ **टेलीविजन :-** संस्कृत भाषा से संबंधित बहुत सारे कार्यक्रम आजकल टेलीविजन के माध्यम से प्रसारण किए जाते हैं।

• कम्यूटर :-

• चलचित्र (Movies) :- बालकों को महापुरुषों के जीवन पर आधारित एवं देशभक्ति फिल्मों भी दिखाई जा सकती हैं जो बालकों के लिए उपयोगी एवं चरित्र निर्माण वाली हैं।

• नाटक :- नाटक से श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है। नाटक विषय वस्तु का अभिनय के द्वारा सजीव चित्रण किया जा सकता है।

संस्कृत पाठ्यपुस्तकानि

• **पुस्तक :-** Book शब्द जर्मन भाषा के वीक (Beach) शब्द से बना है, जिसका अर्थ है - वृक्ष।

• **पाठ्यपुस्तक :-** पाठ्यपुस्तक से हमारा अभिप्राय उस पुस्तक से है, जिसका प्रयोग कक्षा-शिक्षण में शिक्षक व छात्रों द्वारा किया जाता है। आज हमारी सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित है।

• पाठ्यपुस्तक शिक्षण का आधार होती है।

• शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति, मूल्यांकन, पाठ-नियोजन, पठितोशो की पुनरावृत्ति, गृहकार्य, आदि के लिए महत्वपूर्ण दृश्य सामग्री है।

❖ **पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता :-**

• शिक्षक का कार्य सरल करने हेतु

• मार्गदर्शन हेतु सहायक

• अव्यवस्थित ज्ञान को व्यवस्थित करने में

❖ **पाठ्यपुस्तक के उद्देश्य :-**

• बालकों के ज्ञान की सीमा का विस्तार करना।

• छात्रों में कल्पना शक्ति का विकास

• सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।

• संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -  (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJ18> (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6URO>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKj14nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gzzfJyt6vl>





EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसम्बर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसम्बर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसम्बर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)





& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.



Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	11419512037002 2	PratapNag ar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier- 1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	Mahender Singh	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumang arh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumang arh
N.A	Mangilal Siyag	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumang arh
N.A	Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawa la
N.A	LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	Ramchandra Pediwal	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village- gudaram singh, teshil-sojat
N.A	OM PARKSH	RAS	N.A.	Teshil- mundwa Dis- Nagaur
N.A	Sikha Yadav	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	mukesh kumar bairwa s/o ram avtar	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUN U
N.A	Rinku	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	Rupnarayan Gurjar	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO Marks) (84	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



Whatsapp करें - <https://wa.link/hvnbp7>

Online order करें - <https://shorturl.at/nM368>

Call करें - **9887809083**